महात्मा गाँधी जी के आर्थिक विचारों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता

राजकिशोर धामाणी

व्याख्याता अर्थशास्त्र

बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय अलवर (राज.)

प्रस्तावना - महात्मा गाँधी का कथन कि 'जो अर्थशास्त्र शक्तिशाली व्यक्तियों को गरीब का शोषण सिखाता है वह असत्य अर्थशास्त्र है, सच्चा अर्थशास्त्र सबके लाभ के लिए होता है और वह जीवन के लिए अनिवार्य है।'

इस शोध-आलेख में गाँधी जी के आर्थिक विचारों की वर्तमान समय में क्या प्रासंगिकता है उसको बताने का प्रयास किया है। महात्मा गाँधी जी कोई अर्थशास्त्री नहीं थे और न ही उन्होंने कोई अलग से आर्थिक विचार दिये, लेकिन उनके आर्थिक विचारों की झलक उनके लेखों आपण एवं कर्मों में दिखायी देती है। गाँधी जी के आर्थिक विचारधारा के मूल सिद्धांत अहिंसा, सत्य, मानवतावाद, सादगी, श्रम की पूजा आदि पर आधारित है। गाँधी जी के विचारों पर विभिन्न धर्मों का प्रभाव, महान विचारकों का प्रभाव, उनकी माताजी का प्रभाव, अराजकतावाद का प्रभाव, भारतीय दशाओं का प्रभाव, विदेशी शासन के द्वारा किया गया शोषण का प्रभाव झलकता है एवं तत्कालीन भारतीय सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक समस्याओं का विशेष प्रभाव देखा जा सकता है।

गाँधी जी के आर्थिक विचारों के निम्न बिन्दुओं पर विचार करते हैं: आवश्यकता संबंधी विचार - गाँधी जी के आर्थिक विचारों में सादगी को विशेष स्थान प्राप्त है। गाँधी जी के आर्थिक क्रियाओं का उद्देश्य उपभोग नहीं वरन् त्याग मानते थे उन्होंने जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं भोजन, वस्त्र, निवास, शिक्षा एवं चिकित्सा को ही अनिवार्य बताया और शेष आवश्यकताओं को कम करने पर बल दिया उनके अर्थशास्त्र में विलासिता का कोई स्थान नहीं था, वे सादा जीवन उच्च विचार के समर्थक थे उनका विचार था कि सच्चा सुख को प्राप्त करने के लिए आवश्यकताओं का सीमित दे होना आवश्यक है, उनको तर्क था कि असंतुष्ट आवश्यकताओं की संख्या जितनी कम होती है व्यक्ति को उतना ही कष्ट कम सहना पड़ता है। उनका विश्वास था कि ऊँचा - जीवनस्तर बहुत आवश्यकताओं की संतुष्टि से नहीं बल्कि ऊँचे आदर्शों से निर्मित होती है। गाँधी जी के इस दृष्टिकोण का अनुसरण प्रसिद्ध भारतीय अर्थशास्त्री प्रो. जे. के. मेहता ने किया है।

वर्तमान समय में हम विचार करते हैं चर्चा करते हैं तो यह बात समझ में आती है कि जीवन का मुख्य उद्देश्य धन को जोड़ना नहीं होना चाहिए। आवश्यकताओं को कम करके ही व्यक्ति सुखी रह सकता है गाँधी जी के धार्मिक व आध्यात्मिक विचारों से संपूर्ण समाज को सीखना चाहिए व कर्म पर विश्वास रखना चाहिए।

गाँधी जी का संरक्षता या प्रन्यास या ट्रस्टीशिप का सिद्धांत - गाँधी जी समाज में व्याप्त आर्थिक षमता को मिटाना चाहते थे, व्यक्तिगत सम्पत्ति का अंत चाहते थे एवं आर्थिक विषमता को दूर करने के लिए उन्होंने संरक्षता का सिद्धांत प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि यदि किसी व्यक्ति को उत्तराधिकार से भारी सम्पत्ति मिलती है अथवा किसी ने व्यापार-उदोग के लाभ से भारी मात्रा में धन संचय किया तो वह संपूर्ण सम्पत्ति वास्तव में उस व्यक्ति की न होकर संपूर्ण समाज की है जिस व्यक्ति ने सम्पत्ति का संचय किया है वह स्वयं को सम्पत्ति का स्वामी न समझकर ट्रस्टी समझे। तथा सम्मानपूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए आवश्यक सम्पत्ति पर व्यक्ति अपना अधिकार समझे और धन का शेष भाग संपूर्ण राष्ट्र का मानते हुए सभी के कल्याण पर खर्च करने को हृदय से तत्पर रहे।

इस प्रकार गाँधी जी का धन के समान वितरण की योजना का मुख्य उद्देश्य अहिंसात्मक विधि से पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का प्रमुख दोष अन्यायपूर्ण वितरण को समाप्त करना था। भारतीय अर्थव्यवस्था की समस्याओं में भी प्रमुख समस्या आय व धन का असमान वितरण है, गरीबी व बेरोजगारी की समस्या है, यदि संपूर्ण समाज का विकास व देश का विकास करता है इसके लिए यदि गाँधी जी के ट्रस्टीशिप सिद्धांत का थोड़ा सा भी विचारों में आ जाये तो स्वयं देश उच्च संस्कार व विचार के साथ विकास करेगा। परंतु ऐसा होना थोड़ा कठिन है इसके लिए ही वर्तमान सरकार द्वारा करों द्वारा व गरीब वर्ग को कोई तरह की सहायता देकर आय व धन का समान वितरण का प्रयास किया जा रहा है।

औद्योगीकरण - गाँधी जी बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण के कट्टर विरोधी थे उनका विश्वास था कि बड़े पैमाने के उत्पादन से ही विभिन्न सामाजिक और आर्थिक दोष उत्पन्न हुए हैं। मशीनों का उपयोग मनुष्य को आलसी बना देता है और वह परिश्रम से कतराने लगते हैं। गाँधी जी ने विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था का पक्ष लिया अर्थात एक ऐसी अर्थव्यवस्था को उत्तम समझा जिसमें श्रमिक स्वयं अपना स्वामी हो । विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था में श्रमिकों का शोषण नहीं होगा हिंसा के अवसर नहीं होंगे। गाँधी जी का विश्वास था कि भारत जैसे अधिक जनसंख्या औरगरीब देश के लिए मशीनों का उपयोग लाभप्रद नहीं होगा। भारत देश में अधिक जनसंख्या को काम पर लगाने की दृष्टि से उत्पादन की ऐसी प्रणालियाँ काम में लानी होगी जिसमें अधिकाधिक श्रमिकों की खपत हो । यद्यपि गाँधी जी मशीनों द्वारा संचालित उद्योग के विरोधी थे पर बाद में गाँधी जी का मत था कि बड़े पैमाने के उद्योगों को कुटीर उद्योगों का प्रतिद्वंदी न बनाकर उनका सहायक बनना चाहिए। इसके अतिरिक्त गाँधी जी बिजली, जहाज निर्माण, लौह उद्योग, मशीन निर्माण आदि जो आवश्यक है उनके विरूद्ध नहीं थे किन्तु वे इन दो बातों को महत्व देते थे प्रथम समस्त समाज का अधिकतम कल्याण एवं द्वितीय हमारे जीवन का उद्देश्य अपनी मौलिक आवश्यकताओं की वृद्धि में हम अपने जीवन का वास्तविक उद्देश्य न भूल जावें । कल्याणवादी अर्थशास्त्र में पीगू व पेरेटो के विचार, बेन्थम के विचार भी इसी तरह के हैं। उद्योगों के क्षेत्र में गाँधी जी ग्राम उद्योगों और छोटे उद्योगों को प्राथमिकता देते थे उनके अनुसार इसमें काम करने में अधिक आत्मसंतोष भी प्राप्त होता है, आत्मनिर्भरता बढ़ती है। व्यय कम होता है कम पूँजी पर ये छोटे व कुटीर उद्योग कार्य कर सकता है। वर्तमान में गाँवों का विकास औद्योगीकरण में कभी संभव नहीं है। गाँव का विकास ही भारत का विकास है। जो लघु व कुटीर उद्योग से ही संभव है इसके अतिरिक्त कृषि में छिपी बेरोजगारी (मौसमी बेरोजगारी, अदृश्य बेरोजगारी) भी लघु, कुटीर उद्योगों के विकास से दूर हो सकती है तथा उत्पादन, व्यय, सुरक्षा, शोषण और प्रदूषण रहित वातावरण इन सभी दृष्टिकोण से लघु उद्योग व्यवहार्य व वांछनीय होता है।

विकेन्द्रीकरण - गाँधी जी केन्द्रित अर्थव्यवस्था के विरुद्ध थे क्योंकि उनका विश्वास था कि यह शोषण को जन्म देती है इसकी नींव हिंसा पर आधारित है गाँधी जी शोषण को हिंसा मानते थे इसलिए उन्होंने विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था का समर्थन किया और कहा कि उत्पादन को अनेक स्थानों पर छोटे पैमाने पर चालू किया जाए, घरों में छोटी-छोटी इकाइयों को स्थापित किया जाये। 'विकेन्द्रित व्यवस्था को वे लोकतंत्र का जीवन रक्त समझते थे' गाँधी जी रूस की भाँति राज्य द्वारा नियंत्रित अर्थव्यवस्था के समर्थक नहीं थे। गाँधी जी विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था को प्रजातंत्र को वनार्य रखने के लिए आवश्यक समझते थे। उनका यह विचार था कि इसक प्रकार की व्यवस्था से अहिंसात्मक समाज की स्थापना होगी।

कोई भी देश के संपूर्ण विकास के लिए विकेन्द्रीकृत व्यवस्था महत्वपूर्ण स्थान रखती है। भारत जैसे बड़ेलोकतांत्रिक देश में इसका बहुत महत्व हैं अत: देश के संपूर्ण भागों का विकास करना है तो विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था आवश्यक है। गाँधी जी के विकेन्द्रीकरण को विचार वर्तमान समय में बहुत महत्वपूर्ण है।

गाँधी जी के वितरण और राजस्व संबंधी विचार - गाँधी जी राष्ट्रीय आय का वितरण समानता के सिद्धांत के आधार पर चाहते हैं। उनका समान वितरण से तात्पर्य प्रत्येक साधन को उसकी आवश्यकतानुसार पुरस्कार से था। गाँधी जी प्रत्येक साधन को उतना पुरस्कार दिखाना चाहते थे कि वह साधन अपनी प्राकृतिक आवश्यकताओं को सरलता से

पूरा कर सके । गाँधी जी ने कहा 'समान वितरण का अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति को उसकी प्राकृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के बराबर पुरस्कार प्राप्त हो इससे अधिक नहीं।

करारोपण के संबंध में गाँधी जी का विचार है कि प्रत्येक व्यक्ति से उसकी करदान क्षमता के अनुसार ही कर वसूल किये जाना चाहिए। गाँधी जी का यह भी सुझाव था कि सरकार को उस कर राशि का प्रयोग जनसाधारण के कल्याण के लिए करना चाहिए।

वितरण और राजस्व के विचारों की वर्तमान समय में भी लागू किये जा रहे हैं। सरकार अमीरों पर अधिक कर लगाकर गरीबों के हित में खर्च कर रही है। न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, गरीबी दूर करने के लिए गरीब वर्ग को बहुत सारी योजनायें भी लागू कर रही हैं।

कृषि संबंधी विचार - गाँधी जी कृषि व्यवसाय को सर्वाधिक महत्व देते थे। उनका विश्वास था कि देश की आर्थिक स्थिति को ऊँचा उठाने का एक मात्र व्यवसाय कृषि ही है। उन्होंने कृषि विकास के लिए सिंचाई के साधन बढ़ाने, सस्ता ऋण उपलब्ध कराने, ग्रामीण बेरोजगारी दूर करने के अनेक सुझाव दिये। उनका कहना था भूमि प्रकृति का नि:शुल्क उपहार है उसे व्यक्तिगत अधिकार न होकर संपूर्ण समाज का अधिकार होना चाहिए। वे
भूमि पर कृषकों का स्वामित्व चाहते थे, वे प्रत्येक गाँव को आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे, कृषकों की ऋणग्रस्ता की समस्या से मुक्ति दिलाने के लिए गाँधी जी ने सहकारी साख समितियों पर बल दिया, ग्रामीण बेकारी की समस्या के निदान के लिए कुटीर उद्योग को प्रोत्साहित करने का सुझाव दिया।
इस प्रकार गाँधी जी के भारतीय कृषि संबंधी विचार वर्तमान समय में बहुत ही प्रासांगिक है। उन्होंने कृषि संबंधी समस्याओं का गहन अध्ययन किया और उन्हें दूर करने के लिए जो सुझाव दिये वो आज भी महत्वपूर्ण हैं। कुटीर उद्योग संबंधी विचार - गाँधी जी मानते थे कि बड़े पैमाने के उद्योग बेरोजगारी, आत्मनिर्भरता का अभाव, आर्थिक संकट, आय व सम्पत्ति का असमान वितरण, आत्मनिर्भरता का अभाव व कई सामाजिक एवं आर्थिक बुराइयाँ उत्पन्न करते हैं। अर्थव्यवस्था को इन बुराइयों से बचाने का एकमात्र उपाय कुटीर उद्योग का विकास है। गाँधी जी ने कहा था कि 'भारत का मोक्ष कुटीर उद्योग धंधों पर निर्भर करता है।' उनका विश्वास था कि ग्रामीण क्षेत्रों पर पायी जाने वाली बेरोजगारी एवं अर्द्ध बेरोजगारी और गरीबी की समस्या का हल कुटीर उद्योगों के विकास से ही संभव हैं इसके अतिरिक्त प्रत्येक गाँव को आत्मनिर्भर बनाने के लिए भी कुटीर उद्योगों के विस्तार की आवश्यकता है। गाँधी जी ने कुटीर उद्योग के साथ लघु उद्योग धंधों की स्थापना एवं विकास पर भी बल दिया।

गाँधी जी के कुटीर उद्योग संबंधी विचार वर्तमान समय की सबसे बड़ी माँग हैं गाँवों का विकास, गाँवों की बेरोजगारी (कृषि में अदृश्य बेरोजगारी, अर्द्ध बेरोजगारी) दूर करके व गरीबी दूर करके ही संभव हैं जो कुटीर उद्योगों के विकास से ही संभव है।

जनसंख्या संबंधी विचार - गाँधी जी बढ़ती हुई जनसंख्या को राष्ट्रीय हितों के विरूद्ध समझते थे उनका विचार था कि प्रत्येक देश में जनसंख्या प्राकृतिक साधनों के अनुकूल होना चाहिए। गाँधी जी का विचार था कि आर्थिक समस्याओं का कारण जनसंख्या की अधिकता **न** होकर उपलब्ध प्राकृतिक साधनों का पूर्ण शोषण न किया जाना है। परंतु वर्तमान में प्रतिवर्ष दर से बढ़ती हुई जनसंख्या कई आर्थिक समस्याओं गरीबी, बेरोजगारी, खाद्य संकट, कुपोषण, बीमारियाँ आदि बढ़ रही हैं इसलिए जनसंख्या का नियंत्रण वर्तमान समय की आवश्यकता है।

वर्ण व्यवस्था - गाँधी जी प्राचीन वर्ण व्यवस्था पर आधारित श्रम विभाजन को समाज के लिए हितकर स्वीकार करते थे । उनका विचार था कि वर्ण व्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति को अपने माता-पिता का व्यवसाय उत्ताराधिकार में प्राप्त हो जाता है जिससे उसकी आर्थिक समस्या व रोजगार की समस्या सामने नहीं आती है। गाँधी जी व्यवसाय परिवर्तन के विरोधी नहीं थे पर उनका कहना कि व्यवसाय परिवर्तन निजी लाभ के उद्देश्य से नहीं वरन् सेवा भावना से किया जाना चाहिए। यद्यपि गाँधी जी व्यावसायिक आधार पर तो वर्ण व्यवस्था को लाभप्रद स्वीकार करते थे परन्तु वर्ण व्यवस्था के सामाजिक भेदभाव और ऊँच-नीच की भावना को बुरा समझते थे। उन्होंने जीवनभर इस ऊँच-नीच की

भावना को समाप्त करने के लिए संघर्ष किया। वर्तमान में भी सरकार इस छुआछूत को व ऊँच-नीच के भाव को समाप्त करने में प्रयासरत है। क्योंकि अभी भी कई पिछड़े क्षेत्रों में यह भावना देखी जाती है।

व्यक्तिगत स्वतंत्रता- गाँधी जी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के प्रबल समर्थक थे। उनका विचार था कि राज्यको व्यक्ति की स्वतंत्रता पर कम से कम प्रतिबंध लगाना चाहिए। सभी व्यक्तियों को उन्नति के समान अवसर प्राप्त होने चाहिए सभी को न्याय प्राप्त होना चाहिए। उनका कहना था कि 'मनुष्य अपने कार्य पर स्वयं बड़ा निर्णायक होता है। राज्य की बढ़ती हुई शक्ति मुझे सदा भयभीत करती है।' व्यक्तिगत स्वतंत्रता का विचार वर्तमान भारत की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण है जो निरंतर बढ़ रहा है। शिक्षा से लेकर स्वास्थ्य सेवायें, व्यवसाय, तकनीकी क्षेत्र सभी में निजी क्षेत्र का योगदान बढ़ रहा है।

ग्रामीण सर्वोदय - ग्रामीण सर्वोदय गाँधी जी का महान आदर्श था गाँधी जी ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सुधार और विस्तार के प्रबल समर्थक थे उनके अनुसार भारत गाँवों का देश है और जब तक इन गाँवों का विकास नहीं होता तब तक राष्ट्र शक्तिशाली नहीं बन सकता। गाँधी जी का अर्थशास्त्र मूलत: ग्राम प्रधान अर्थशास्त्र है। ग्रामीण विकास के संदर्भ में गाँधी जी ने आदर्श ग्राम की कल्पना की और देश के सभी ग्रामों को इस रूप में विकसित करने का विचार दिया। वर्तमान में जो योजना कि हर सांसद या विधायक एक ग्राम को गोद ले उसगाँव का विकास करें यह विचार भी गाँधी जी के विचार की है **देन** कहा जा सकता है। गाँधी जी ग्राम पंचायत को शक्तिशाली बनाना चाहते थे ग्रामीण प्रशासन एवं व्यवस्था पंचायतों द्वारा चाहते थे। वर्तमान में भी पंचायती राज व ग्राम पंचायतें कार्य कर आदर्श गाँव की स्थापना कर रही है।

अर्थशास्त्र के प्रति नैतिक दृष्टिकोण - गाँधी जी ने आर्थिक विचारों की नैतिक आधारशिला प्रदान की। उन्होंने कहा कि सच्चा अर्थशास्त्र कभी भी उच्चतम नैतिक मापदंड के विरूद्ध नहीं जा सकता। अर्थशास्त्र को न्याय भावना से परिपूर्ण होना चाहिए। वह अर्थशास्त्र जो व्यक्ति अथवा राष्ट्र के नैतिक कल्याण पर आघात करता है वह अनैतिक है इसलिए पापपूर्ण है। मनुष्य अपने लिए भौतिक लाभ की आशा से ही कर्म करने को प्रेरित हो इस प्रकार का विचार पतन की ओर ले जाता है। गाँधी जी का अर्थशास्त्र नैतिकता से युक्त था उनका कथन कि 'जो अर्थशास्त्र शक्तिशाली व्यक्तियों को **गरीब** का शोषण सिखाता है वह असत्य अर्थशास्त्र है सच्चा अर्थशास्त्र सबके लाभ के लिए होता है और वह जीवन के लिए अनिवार्य है।' यह कथन एक आदर्श अर्थशास्त्र को इंगित करता है जिसको वर्तमान में जे. के. मेहता आदि के विचारों में भी देखा जा रहा है। कल्याण का अर्थशास्त्र, सुखी होने का अर्थशास्त्र के विचार जो वर्तमान में देखे जा रहे हैं वह गाँधी जी के विचारों में काफी मेल करते हैं। गाँधी जी का यह कथन कि 'अर्थनीति और नैतिक पक्ष एक दूसरे के पूरक हैं अर्थात् आर्थिक प्रतिस्पर्द्धा में हमें अपनी नैतिकता को भूलना नहीं चाहिए क्योंकि प्रकृति के नियमपूर्ण सत्य है परंतु आर्थिक नियम समय व स्थान के साथ बदलते रहते हैं।'

इसके अतिरिक्त सत्य और अहिंसा गाँधी जी के महान अस्त्र हैं जिन्होंने इनके माध्यम से देश को स्वतंत्र कराने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। गाँधी जी का मानना था कि भारत की सभी समस्याओं का समाधान अहिंसा में छिपा है गाँधी जी उन सभी अहिंसक आजीविकाओं के समर्थन में थे जो घृणा और शोषण के विरुद्ध हों। उनके अर्थशास्त्र में हिंसा का कोई स्थान न था उनका समाजवाद व्यक्ति की स्वतंत्रता, प्रजातंत्र और अहिंसा पर आधारित है।

इस प्रकार गाँधी जी के आर्थिक विचार बहुत ही परिपक्क और उनकी गहरी सोच को स्पष्ट करते हैं। गाँधी जी कोई अर्थशास्त्री नहीं थे वस्तुतः गाँधी जी एक व्यवहारिक अर्थशास्त्री थे उन्हें भारत और उसकी दलित एवं शोषित जनता से बहुत लगाव था अत: उन्होंने भारतीय-आर्थिक समस्याओं का गहरा अध्ययन किया और उनके समाधान के लिए व्यवहारिक उपाय प्रस्तुत किये। गाँधी जी आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक व्यवस्था को आदर्श और दार्शनिक आधार पर स्थापित करना चाहते थे। गाँधी जी के आर्थिक विचारों का महत्व चिरस्थायी है। जब भौतिकवाद अपनी चरम सीमा पर पहुँच जायेगा और जब लोग भौतिकवाद से ऊब जायेंगे तो महात्मा गाँधी के विचार निश्चित रूप से उनका मार्गदर्शन करेंगे। अभी भी भारतीय अर्थव्यवस्था में उनके विचार महत्वपूर्ण हैं और आगे भी उनके विचारों को अनदेखा कर भारत देश विकास के संबंध में सोच भी नहीं सकता।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. महात्मा गाँधी का समाज दर्शन - महादेव प्रसाद
2. प्रतिनिधि भारतीय राजनीतिक चिंतक डॉ. अमरेश्वर अवस्थी एवं डॉ. रामकुमार अवस्थी
3. आर्थिक विचारों का इतिहास - डॉ. पी. डी. माहेश्वरी एवं जैन
4. आर्थिक विचारों का इतिहास - राजेश कुमार वर्मा, शिशिर कुमार वर्मा
5. गाँधी और अहिंसक आंदोलन - शंकर दयाल सिंह
6. आर्थिक चिंतन का इतिहास - डॉ. चतुर्वेदी एवं डॉ. चतुर्वेदी